بسم الله الرحمن الرحيم

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

20 April 2018 (03 Shabaan 1439 AH)

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

"अल्लाह और उसके उपदेश को धन्यवाद देते हुए "(भाग २)।"

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों,(और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **"अल्लाह और उसके उपदेश को धन्यवाद देते हुए "(भाग २)।**

अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाह (स व त) ने मुझे शुक्रवार उपदेश का दूसरा भाग जारी रखने का तौफीक दिया है, जिसे मैंने पिछले शुक्रवार को दिव्य अभिव्यक्ति के महिलाओं और पुरुषों के लिए अपनी सलाह पर शुरू किया था।

स्पष्ट रूप से बोला जा रहा है ,की किसी को सही रास्ते पर लाना, कभी आसान काम नहीं रहा है। लकिन यह वास्तव में सर्वोच्च पुण्य का कार्य है। इसलिए यह हमारे दुनिया भर के सभी जमात पर अनिवार्य है, न केवल हमारे सदस्यों को सभी प्रकार की कुशल गतिविधियों से जोड़ा जाता है लेकिन उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने के साथ ही उन्हें इस तरह के सामाजिक बोझ को उठाने के लिए सक्षम करना होगा। इसका कारण यह है कि जिम्मेदारी का प्रभार हमेशा के लिए एक व्यक्ति की धारणा को अचलता से बदल देता है। यह उनके ज्ञान और विशेषज्ञता और उनकी विचार शक्ति को गहरा करता है। यह उन्हें स्वतंत्र व्यक्ति बनने में सक्षम बनाता है जो हमारे जमात के अच्छे रखरखाव और आने वाले वर्षों के सुधार के लिए योजना को ला सकता है। यह उन्हें अपने व्यक्तित्व को विकसित करने और उनके दीन (धर्म - अर्थात् इस्लाम) के साथ एक करीबी संबंध बनाए रखने में मदद करता है।

हमारे विभिन्न संगठनों में पदाधिकारी, जो भी नाम या कर्तव्य उन्हें सौंपा गया हो, बाद में उनकी जिम्मेदारियों को संभालने के लिए पहले उन्हें प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। जमात के शीर्ष पर भरोसेमंद और पवित्र सदस्य होने चाहिए, जैसे लोग अल्लाह की मदद से पूरे इस्लामी व्यवस्था के संतुलन को बनाए रखने में सक्षम होंगे, और उसके लिए तक़वा बिल्कुल जरूरी है। तक़वा के बिना, मनुष्य एक निर्जीव पौधे की तरह है। वह बिना पवित्रता, धार्मिकता और अल्लाह के लिए पूर्ण भय और सम्मान के परे स्वेच्छाचारी बन जायेंगें , सभी को देखने और सुनने वाला।

इस प्रकार, हमारे युवाओं को ज़िम्मेदारियाँ देने से, उन्हें जीवन में पहले से ही अल्लाह के कार्य के लिए उत्तम स्तर के अपनेपन की सही मदद मिलेगी; वे हमारे कार्य को बेहतर समझेंगें और वे जो कुछ भी करेंगे वो अल्लाह को खुश करने का प्रयास होगा। याद रखिए, शैतान इंसान का सबसे पीड़ादायक दुश्मन है। वह और उसकी सेना आपको जीवन में विभिन्न बिंदुओं पर विचलित करने की कोशिश करेंगे, लेकिन आपको उसकी कानाफूसी और निमंत्रण को दरकिनार करने की आवश्यकता है और अपना ध्यान और अल्लाह पर प्यार और उसके सत्य पर केंद्रित करें। हमेशा सही मार्ग का अनुसरण करें, भले ही यह लाख गुना कठिन हो, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं उस कांटेदार पथ के अंत में पुरस्कारों का सबसे मनोरम पाया जाता है। याद रखें कि आपका बलिदान अल्पकालिक है जबकि अल्लाह द्वारा वादा किया

गया पुरस्कार अनन्त है। अब, यह आपके लिए है कि आप किस रास्ते पर चलना चाहते हैं: बर्बादी का रास्ता या मोक्ष का मार्ग।

याद रखें, अपने बच्चों का प्रशिक्षण - उनके जन्म से मृत्यु तक, हमारे जमात के भविष्य के उज्ज्वल तत्व जल्दी शुरू होना चाहिए। लेकिन किसी भी तरह से माता-पिता को औपचारिक रूप से - जमात के दायरे के अंदर - अपने नवजातों को अल्लाह के कार्य में, जमात उल साहिह अल इस्लाम के कार्य में समर्पित करने के लिए वादा नहीं करना चाहिए। अगर आप में यह विचार है, तो अपने बच्चों को इस्लामीय आदर्श के अनुसार लाएँ, उसे अल्लाह और उसके नबियों के लिए और कुरान के लिए प्यार और इस्लाम और हमारे जमात के कार्य करने वाला बनाएँ।

छोटे से इब्राहिम (अ.स.) बनें और अपने बच्चों को छोटा सा इस्माईल (अ स) बनने दें क्योंकि जब वह किशोरावस्था की समझ की उम्र तक पहुँच गए थे हज़रत इब्राहिम (अ.स.) ने उन्हें उस दृष्टि के बारे में बताया जो उन्होंने देखा, जब इस्माईल (अ.स.) एक छोटे बच्चे थे। और तब वह इस विषय पर- उनका निर्णय -इस्माईल (अ.स.) की राय लेना चाहते थे । फिर हज़रत इस्माईल (अ.स.) ने अपने पिता को जवाब देते हुए कहा की वो करें जो अल्लाह ने उन्हें दिखाया है (उसे सपने में ऐसा करने की आज्ञा दी)। इसलिए, निर्णय के संबंध में किसी के बच्चे को अल्लाह के रास्ते में समर्पित करने से ,आपको हज़रत इब्राहिम (अ.स.) और इस्माइल (अ.स.) की तरह करना होगा और जो जमात अहमदिया ने 'वक़्फ़- ए-नौ' के विषय में की, हर कीमत पर उस आपत्तिजनक गलती से बचें। एक बच्चे के जन्म से पहले या अभी-अभी पैदा हुए के लिए, वे केवल खलीफा को खुश करने के लिए समर्पित हैं (ख़लीफ़तुल -मसीह)। आज हमें 'वक़्फ़- ए-नौ' योजना में 'समर्पित' हुए उन सभी से संबंधित परिणाम प्राप्त हुए हैं। वास्तव में बहुत कम प्रतिशत (बच्चे उस शुरुआती वादे पर खरे उतरते है), खासकर मॉरीशस में!

इसके अलावा, जब वे समझ की उम्र तक पहुँचते हैं तो उन्हें मजबूर न करें। इसके बजाय, आपको उनके (बेटा या बेटी) साथ बात करनी चाहिए और अपने बच्चों को यह तय करने देना चाहिए कि वह(बेटा या बेटी) अल्लाह के कार्य के लिए काम करना चाहेंगें । प्राचीन समय की गलतियों को याद रखें और उन्हें दोहराएं नहीं। अपने नवजात शिशुओं को समर्पित करने का वादा न करें ,उनके पास खुद को व्यक्त करने के लिए ज़बान की शक्ति नहीं है। अगर हज़रत मरियम (र अ) की माँ की तरह, आप अपने बच्चे को अल्लाह के कार्य के लिए समर्पित करने की इच्छा रखते हैं, तो यह आपके और अल्लाह के बीच है, और अल्लाह आपके अनुरोध / दुआ को स्वीकार करने का चयन करेगा या नहीं (यह ध्यान में रखने के लिए कि दुआ को स्वीकार करने से जुड़ी कुछ विशिष्ट शर्तें थीं जो मरियम और उनकी माँ दोनों को पालन करना पड़ा था),विशेष रूप से एकांत में रहने के संबंध में (अल्लाह की अनन्य उपासना के लिए)(पवित्र स्थानों पर)। लेकिन मैं आपको यह सलाह देता हूं, की कभी भी अपने बच्चों के सम्बन्ध में अल्लाह के कार्य में आजीवन समर्पण करने के विषय में निर्णय न लें। इसे स्वाभाविक रूप से अल्लाह की मदद से आने दें और अल्लाह के रास्ते में अपने बेटे और बेटियों की अच्छी परवरिश करें। जब उनकी अच्छी परवरिश होती है और अल्लाह के साथ उनका एक ठोस संबंध बन जाता है, तो उनके फैसले अल्लाह की इच्छा से प्रभावित होंगे जो उनके लिए सबसे अच्छा है।

इसलिए मैं सभी सिराज मकीन को अपने बच्चों और सभी बच्चों और हमारे जमात के युवा, पहले की युवा महिलाओं की प्रशिक्षण शुरू करने की सलाह देता हूं। इसमें कोई शक नहीं है कि प्रशिक्षक और प्रशिक्षु दो अलग-अलग विभागों से संबंधित हैं। जब सिराज मकीन किसी व्यक्ति को सीधे तौर पर सामान्य प्रशिक्षण प्रदान करती हैं, तो उन्हें दिव्य आशीर्वाद के साथ पुरस्कृत किया जाता है। जब सिराज मकीन अन्य एजेंसियों के माध्यम से भी काम कराती है, तब भी वह अपने लिए दिव्य अनुमोदन अर्जित करती है। और एक बार जब आप दूसरों द्वारा काम करना शुरू कर देते हैं और इस प्रक्रिया में आप अपने समय और संसाधनों का भी त्याग करते हैं, तो ऐसा कुछ भी नहीं है जो आपके तेज आध्यात्मिक विकास को बाधित कर सकता है। यह अब सिराज मकीन प्रबंधन तक है कि वह अपने युवा सदस्यों को इस तरह के कर्तव्यों को सौंपें जैसे वह अलग धार्मिक पृष्ठाधार से है। उन्हें युवाओं को निर्देश देना चाहिए कि उनका सर्वोत्तम समय और प्रतिभा और निष्ठा के लिए निरंतर काम करना चाहिए , उन्हें निहित आनंद के साथ परिचित भी करता है। शुरुआत करने के लिए, युवा लड़कियों को मामूली कार्यभार के साथ निवेश करना चाहिए ताकि प्रशिक्षक और प्रशिक्षु के बीच का अंतर न्यूनतम स्तर तक कम किया जा सके। वास्तव में, कार्य अनुसूची एक तरह से डाली जानी चाहिए ताकि समुदाय के युवा तत्वों को एक निरंतर कार्य चक्र में जोड़ा जा सके।

बहुत अधिक कुशल होने के लिए, सिराज मकीन को अतिरिक्त श्रमिकों की आवश्यकता है। संगठन में अधिक महत्व और प्रतिष्ठा जोड़ने के लिए, सिराज मकीन को अपने गतिविधियों के विशेष क्षेत्र को बढ़ाना चाहिए और युवा पीढ़ी के बीच जिम्मेदारियों के अपने बोझ को विभाजित करना चाहिए। यह उन सलाखों को हटाने में मदद करेगा जो अलग-अलग समूहों को हैसियत और स्थायित्व में अलग करते हैं। वे देखेंगे कि कैसे ईश्वर उनके सभी कार्यों को आशीर्वाद देना शुरू करता हैं और कितनी जल्दी युवा पीढ़ी इस्लामी शिक्षाओं की सच्ची भावना को आत्मसात करने लगती है।

जमात उल साहिह अल इस्लाम में लड़कियों को तुरंत हमारे धार्मिक संगठनों में अवशोषित हो जाना चाहिए और सेवा करने के अवसरों को समुदाय के दोनों व्यक्तिगत और सामूहिक स्तरों पर प्रदान करना चाहिए। दूसरों कि सेवा, मानवता की सबसे कीमती विरासत है, इसे हमारे बच्चों को स्पष्ट किया जाना चाहिए और निष्ठा के लिए सेवा सबसे अधिक सेवा है। मुझे विश्वास है कि यदि योजना अच्छी तरह से काम करती है, तो यह हमारे उज्ज्वल और धन्य भविष्य की प्रस्तावना होगी।

अब हमारे पुरुष वर्ग के लिए सलाह के कुछ शब्द। मेरी ओर से सटीक नोट के रूप में पिछले हफ्ते के उपदेश से परदाह पर व्याख्या, इस्लाम महिलाओं के परदे को पुरुष शोषण के लिए उन्हें सस्ते दास बनाने का हुक्म नहीं देती। और न ही महिलाओं की शुद्धता की रक्षा करने के लिए उन्हें दिव्य आज्ञा दिया गया है और न ही उनका उद्देश्य पुरुष वर्ग के लिए घरेलू नौकर बनाना है। आप ध्यान दें! सच्चाई यह है कि सभी पुरुष और महिलाएं परमात्मा की दृष्टि में समान हैं। हालांकि लिंगों के बीच कुछ शारीरिक बदलाव भी हैं जो उनकी गतिविधियों को विभिन्न प्रणाली में विभाजित करते हैं। यह अकेले इस कारण से है कि पुरुषों और महिलाओं के कार्य और कर्तव्यों के बीच बुनियादी अंतर हैं। इसी तरह इस्लामी

कानून के कोड में कुछ विशिष्ट आवेदन हैं, जहां पुरुषों और महिलाओं को लिंग के आधार पर अलग तरह से व्यवहार किया जाता है।

फिर भी यह अलग दृष्टिकोण हठधर्मी सिद्धांतों से प्रेरित नहीं है; पुरुष श्रेष्ठता के संप्रदाय से बहुत कम है। लेकिन जैसे मानवाधिकारों के लिए संबंधित है, दोनों पक्षों के बीच कोई भिन्नता नहीं है। हमारे समाज में प्रचलित बुरे प्रभावों के कारण यह मुझे उल्लेख करने के लिए तीव्र दर्द देता है, हमारे स्वयं के आधुनिक समाज के बीच बहुत से ऐसे पुरुष अत्याचारी हैं, जो महिलाओं के अधिकारों के लिए बहुत ही कम दिखते हैं। उनके अनुसार, महिलाएं केवल बच्चे पैदा करने वाली मशीनें होती हैं और जैसे कि उनके पतियों के सुख के लिए उन्हें सभी प्रकार की कठिनाइयों से गुजरना अपेक्षित है। उनसे उम्मीद की जाती है कि वे गूंगे जानवरों की तरह काम करेंगीं और कभी भी पुरुष वर्ग द्वारा किये गए कठोर व्यवहार की शिकायत नहीं करेंगीं। ये पुरुष यह भी मानते हैं कि उन्हें अपनी पत्नी को सबसे निर्बल बहाने पर हराने का अधिकार है। इस प्रकृति के कई उदाहरण इस्लाम में भी हैं और ऐसी प्रचलित स्थितियों पर मेरा दिल कड़ुवाहट के साथ दर्द होता है। इस दुनिया में कुछ मनहूस लोग हैं, जो स्वर्ग में प्रवेश करने के बजाय, उनकी माँओं के पैरों के नीचे के नरक की ओर जायेंगें । वे महिलाओं के अधिकारों की अवहेलना करते हैं और इस प्रकार उन्हें परमात्मा की नाराजगी प्राप्त होगी। वे न केवल अत्याचारी हैं, बल्कि उनके बुरे-बुरे कार्यों से इस्लाम के निष्पक्ष नाम को भी कलंकित करते हैं। ये लोग जो वास्तव में दुष्टता के अवतार हैं, हमारी सामाजिक व्यवस्था की इतनी प्रभावी रूप से बाहरी दुनिया में अवहेलना कर चुके है ताकि इस्लाम अब पुरुष प्रभुत्व और अत्याचार के लिए लगभग प्रतीक माना जाता है। मुस्लिम सभ्यता और संस्कृति उनकी नजर में महिलाओं के निरादर के स्वरमान पर सबसे कम अपमानजनक है। उन्हें लगता है कि मुस्लिम महिला जुल्म और उत्पीड़न के रथ-पहियों से बंधी है और रिवाजों की हत्कड़ियाँ और नित्य उपयोगों के अनुकूल उसे मुस्लिम पुरुष एड़ी के नीचे रखते है।

इंशा-अल्लाह, मैं अगले शुक्रवार को इसी विषय पर जारी रहूंगा। तब तक, आशा है जमात उल साहिह अल इस्लाम के प्रत्येक सदस्य अपने जीवनसाथी के प्रति और समाज के प्रति आपके कर्मों और व्यवहार को दर्शाते रहेंगें। याद रखें , जमात उल साहिह अल इस्लाम और ईश्वरीय अभिव्यक्ति संगठित होंगें, यह कभी भी आपके लिए जन्नत का आज्ञापत्र नहीं बनेगा, जब तक आप अपने कर्मों और व्यवहार में सुधार नहीं करते और खुद को अल्लाह की खातिर शुद्धिकरण की अवस्थाओं के साँचे में ढालते है। इस विनम्र सेवक को पहचान कर के आगमन को पहचान कर और खलीफातुल्लाह (अ त ब अ) के रूप में स्वीकार करना और मान्यता देना और जब तक आप अपने आचरण में सुधार नहीं करेंगे और इस्लाम के उपदेशों के अनुसार अपने जीवन को आकार देंगें, और अपने माता-पिता, पति-पत्नी, बच्चे, रिश्तेदार, पड़ोसी, भाई / बहनों की निष्ठा और बाकी के मानव जाति के साथ सौम्य व्यवहार करेंगें और तब तक जमात उल साहिह अल इस्लाम को एकीकृत करने का कोई फायदा नहीं होगा । आशा है अल्लाह तुम में से हर एक को अपने आप शैतानी प्रभाव से छुटकारा पाने में सक्षम करे और पृथ्वी पर इस्लाम का प्रतीक बनें।

इंशा-अल्लाह, आमीन।